SHRI SOMANNA

Shri Somanna, belonging to PVTG tribal group Jenukuruba of Mysore district is known for his works for tribal persons.

2. Born on 1st June, 1957, Shri Somanna lost his father at the age of two due to illness. He studied only up to fourth standard and to take care of his mother he left the school and started working as bonded labourer in the neighboring agriculture family. Till the age of 18 years he worked as bonded labourer and left it in 1978 after the bonded Labour Abolition Act was implemented in Karnataka. He joined Dalit movement 1978. In 1981, he started tribal organization BKS (Budakattu Krushikara Sangha) along with his people and started organizing tribal communities in H.D.Kote, Saraguru and Mysore District.

3. Shri Somanna joined movements like Save Western Ghats, Narmada Movement, Movement against Taj Hotel which was initiated in Nagarahole National Park, Save Avenue Trees, Enter Forest Agitation to seek Forest Rights for Adivasis and movement demanding PESA-1996, FRA-2006. He helped tribal people to approach High Court for public interest litigation to seek justice for displaced tribal families due to Wild life Protection Act. He represented BKS in the High Court of Karnataka along with Development through Education (DEED) in 1999-2000. He got favourable order from High Court in 2009 to rehabilitate 3418 families. Similarly he helped tribal families to apply for Forest Rights-individual and community rights. 19 haadis got community forest rights and about 300 families individual rights.

4. Shri Somanna was the President of Budakattu Krushikara Sangha (tribal peoples organization), H. D. Kote for 10 years from 1984 to 1994 and then he become District President for 4 years. He was elevated to State Indigenous Peoples Forum – Rajya Mulantvasi Vedike as President. During his tenure, he could mobilize nearly 6000 acres of agriculture land with the help of Revenue Deputy Commisioners and Tehsildars for displaced 1500 tribal families out of 4995 from Nagarahole National Park, Bandipur National Park, Kabini and Tharaka Dam area H. D. Kote and Sarguru taluks. He focused on providing civic amenities for tribal communities like housing, connecting roads, drinking water, pre and primary schools, old age pension, ration cards, ration shops etc. for the deprived tribal families from 125 tribal haadis covering nearly 2000 elderly persons and widows. He also made efforts to get ration card, Voter ID and other identity cards for Adivasis. He is known in all the 125 tribal haadis and 4995 forest dependent tribal families-Jenukuruba, Bettakuruba, Yarava and Soliga as he has responded to their needs as President of BKS.

5. Shri Somanna has been striving to get traditional Forest Rights and Rehabilitation for displaced tribal families from National parks.

श्री सोमन्ना

मैसूर जिले के पीवीटीजी जनजातीय समूह जेनुकुरुबा से संबंध रखने वाले श्री सोमन्ना को जनजातीय लोगों के लिए किए गए उनके कार्यों से जाना जाता है।

2. 1 जून, 1957 को जन्मे, श्री सोमन्ना ने दो साल की उम्र में बीमारी के कारण अपने पिता को खो दिया। उन्होंने सिर्फ चौथी कक्षा तक पढ़ाई की और अपनी मां की देखभाल के लिए स्कूल छोड़कर पड़ोसी किसान परिवार में बंधुआ मजदूर के रूप में काम करना शुरू कर दिया। 18 वर्ष की उम्र तक उन्होंने बंधुआ मजदूर के रूप में काम किया और 1978 में कर्नाटक में बंधुआ मजदूरी उन्मूलन अधिनियम लागू होने के बाद यह काम छोड़ दिया। वह 1978 में दलित आंदोलन में शामिल हुए। 1981 में, उन्होंने अपने लोगों के साथ आदिवासी संगठन बीकेएस (बुडाकट्टू कृषिकारा संघ) शुरू किया और एचडीकोटे, सारागुरु और मैसूर जिले में जनजातीय समुदायों को संगठित करना शुरू किया।

3. श्री सोमन्ना पश्चिमी घाट बचाओ, नर्मदा आंदोलन, नागरहोल नेशनल पार्क में ताज होटल के निर्माण के खिलाफ आंदोलन, सेव एवेन्यू ट्रीज़, आदिवासियों को वन अधिकार दिलाने के लिए एंटर फॉरेस्ट एजीटेशन तथा पी.ई.एस.ए.–1996, एफ.आर.ए.–2006 की मांग करने वाले आंदोलन में शामिल हुए। उन्होंने वन्य जीवन संरक्षण अधिनियम के कारण विस्थापित आदिवासी परिवारों के लिए न्याय पाने के उद्देश्य से उच्च न्यायालय में जनहित याचिका दाखिल करने में जनजातीय लोगों की मदद की। उन्होंने 1999–2000 में डेवलपमेंट थ्रू एजुकेशन (डीईईडी) के साथ कर्नाटक उच्च न्यायालय में बीकेएस का प्रतिनिधित्व किया। 2009 में उच्च न्यायालय ने उनके पक्ष में 3418 परिवारों के पुनर्वास का निर्णय दिया। इसी तरह उन्होंने जनजातीय परिवारों को वन अधिकार– व्यक्तिगत और सामुदायिक अधिकारों के लिए आवेदन करने में मदद की। 19 हादियों को सामुदायिक वन अधिकार और लगभग 300 परिवारों को व्यक्तिगत अधिकार मिले।

4. श्री सोमन्ना 1984 से 1994 तक 10 वर्षों तक बुडाकट्टु कृषिकारा संघ (जनजातीय लोगों का संगठन) एचडी कोटे के अध्यक्ष रहे और फिर 4 वर्षों के लिए जिला अध्यक्ष बने। साथ ही उन्हें पदोन्नत करके स्टेट इंडिजिनस पीपुल्स फोरम – राज्य मूलंतवासी वेदिके का अध्यक्ष बनाया गया। अपने कार्यकाल के दौरान, उन्होंने राजस्व उपायुक्तों और तहसीलदारों की मदद से नागरहोल राष्ट्रीय उद्यान, बांदीपुर राष्ट्रीय उद्यान, काबिनी और थरका बांध क्षेत्र एचडीकोटे और सरगुरु तालुक से विस्थापित 4995 में से 1500 जनजातीय परिवारों के लिए लगभग 6000 एकड़ कृषि भूमि जुटाई। उन्होंने जनजातीय समुदायों के लिए आवास, संपर्क सड़कें, पेयजल, प्री और प्राइमरी स्कूल, वृद्धावस्था पेंशन, राशन कार्ड, राशन की दुकानें आदि जैसी नागरिक सुविधाएं उपलब्ध कराने पर ध्यान केंद्रित किया। इनमें लगभग 2000 बुजुर्गों और विधवाओं सहित 125 जनजातीय हादियों के वंचित आदिवासी परिवार शामिल थे। उन्होंने जनजातीय लोगों के लिए राशन कार्ड, मतदाता पहचान पत्र और अन्य पहचान पत्र बनवाने के भी प्रयास किए। सभी 125 आदिवासी हादियों और 4995 वन आश्रित जनजातीय परिवारों– जेनुकुरुबा , बेट्टाकुरुबा, यारावा और सोलिगा के लोग उन्हें जानते हैं क्योंकि उन्होंने बीकेएस के अध्यक्ष के रूप में उनकी जरूरतों का ध्यान रखा है।

5. श्री सोमन्ना पारंपरिक वन अधिकार और राष्ट्रीय उद्यानों से विस्थापित आदिवासी परिवारों के पुनर्वास के लिए प्रयास करते रहे हैं।